International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 23-04-2019; Accepted: 26-05-2019
www.socialsciencejournal.in
Volume 5; Issue 4; July 2019; Page No. 175-176

वैयक्तिक भिन्नता एवं उसके अध्ययन की विधियां

अनामिका सिंह
एम0 एड् छात्रा झुनझुनवाला पोस्ट ग्रेजुएट डिग्री कालेज फैजाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

वैयक्तिक भिन्नता प्रकृति का स्वाभाविक गुण हैं। सामान्य रूप से सभी व्यक्ति एक सामान दिखते है किन्तु उनका सूक्ष्म अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि उनमें परस्पर अन्तर अवश्य है। प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है। इनमें ऊंचाई भार तथा परिपक्वता के अन्तर देखे जा सकते हैं। एक की माता–पिता की संतानों में भी भिन्नता होती है। व्यक्तिगत भिन्नता का आधार वंशानुक्रम तथा वातावरण से प्राप्त गुण है। सर्वप्रथम 19 वीं शताब्दी में सर फ्रांसिस गाल्टन का ध्यान वंशानुक्रम का अध्ययन करते समय इस ओर गया। इसके बाद 20 वीं शताब्दीं में इसका अध्ययन पियर्सन, कैटेल तथा टरमैन आदि मनोवैज्ञानिकों ने किया। जिसके परिणामस्वरूप शिक्षा के क्षेत्र में इन अध्ययनों के आधार पर व्यक्तिगत् विभिन्नता को जानकर शिक्षाशास्त्रियों ने शिक्षा की योजना एवं प्रणालियों का निर्माण किया।

वैयक्तिक भिन्नता का अर्थ

किन्हीं भी दो व्यक्तियों के व्यक्तित्व और क्रियाओं में जो अंतर होता है। उसे ही हम वैयक्तिक भिन्नता कहते है। इसके अर्न्तगत् व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, तथा सामाजिक विशेषताओं पर ध्यान दिया जाता है एवं इन्हीं विशेषताओं के आधार पर एक विशेष व्यक्ति होता है।

स्किनर के अनुसार, आज हमारा यह विचार है कि व्यक्तिगत भिन्नताओं मे सम्पूर्ण व्यक्तित्व का कोई भी ऐसा पहलू सम्मिलित हो सकता है। जिसकी माप की जा सकती हो।

जेम्स ड्रेवर 1968, ने वैयक्तिक भिन्नता को परिभाषित करते हुए कहा है कि, ''एक समूह के सदस्यों में समूह के मध्यमान से मानसिक या शारीरिक विशेषताओं का विचलन ही वैयक्तिक भिन्नताएँ हैं।''

रेबर 1985, ने वैयक्तिक भिन्नता को परिभाषित करते हुए अपना मत इस प्रकार प्रकट किया है कि, ''वैयक्तिक भिन्नता एक ऐसी मनोवैज्ञानिक घटना है, जो उन विशेषताओं अथवा शीलगुणों पर बल देती है जिनके आधार पर वैयक्तिक जीव एक दूसरे से भिन्न होते प्रदर्शित किए जा सकते हैं।''

वैयक्तिक भिन्नता के कारण

1. **आनुवांशिकताः** मनोवैज्ञानिक गाल्टन, पियर्सन, टरमैन, मैक्डूगल तथा विने आदि ने प्रयोगों से यह सिद्ध किया कि व्यक्तियों की शारीरिक, मानसिक, एवं चारित्रिक विभिन्नताओं का प्रमुख कारण वंशानुक्रम ही है। पैत्रिक गुणों का संक्रमण पीढ़ी दर पीढ़ी होता रहता है किन्तु हम इसे इसलिए मनाने को तैयार नहीं है कि यदि पूरा का पूरा प्रभाव आनुवंशिकता का ही पड़ता तो एक ही माता–पिता की संतानों में कभी भिन्नता नहीं होनी चाहिए। हम यह जानते है कि माता–पिता के कुछ गुण उनके बच्चों में मिलते है किन्तु यह सामान नहीं होता।
2. **पर्यावरणः** वातावरण दो प्रकार का होता है – प्राकृतिक पर्यावरण, सामाजिक पर्यावरण। हम यह जानते है कि व्यक्तिगत पर्यावरण तथा आनुवंशिकता का गुणनफल हैं। जहां का वातावरण ठंडा होता है। जैसे इंग्लैण्ड वहां के लोग गोरे, ऊष्ण प्रदेश जैसे अफ्रीका, वहां के लोग काले होते है। ऐसे ही सामाजिक पर्यावरण का भी प्रभाव पड़ता है। जहां का पर्यावरण अच्छा – वहां के लोग विकसित, जहां का पर्यावरण गंदा, वहां के लोग कम विकसित।
3. **जातीयता एवं राष्ट्रीयता का प्रभावः** जाति प्रजाति एवं वेश भी वैयक्तिक भिन्नता पर काफी गहरा प्रभाव छोड़ते हैं। हम यह देखते है कि अंग्रेज और नाइजीरियन के बच्चे में जमीन आसमान का फर्क होता है। किंतु इसी के साथ मनोवैज्ञानिक यह भी मानते है कि विश्व में कोई शुद्ध जाति या प्रजाति नहीं पाई जाती है। किन्तु देश–वेश का अंतर तो काफी हद तक पड़ता ही है।
4. **आर्थिक स्थिति एवं शिक्षा का प्रभावः** शिक्षा के माध्यम से ही बालक के व्यक्तित्व का विकास होता है। कभी–कभी निर्धनता बस कुछ बालक अशिक्षित रह जाते है परिणामस्वरूप बुद्धि सामान होते हुए भी उनमे अमीर बालकों की अपेक्षा वे पिछड़ जाते है। उनमें भिन्नता आ जाती है।
5. **आयु एवं बुद्धि का प्रभावः** व्यक्तियों में उम्र के हिसाब से ही उनकी बुद्धि का विकास होता हैं। जैसे – जैसे उनकी आयु बढ़ती है वैसे – वैसे उनका मानसिक, सामाजिक एवं शारीरिक विकास होता जाता है। अतः आयु एवं बुद्धि के कारण भी लोगों में विभिन्नता पाई जाती है।
6. **परिपक्वता का प्रभावः** किसी किसी बालक में जन्म के पश्चात् शारीरिक एवं मानसिक विकास तीव्रता से होते हैं एवं किसी किसी में धीरे–धीरे। कभी कभी इसकी मात्रा कम ज्यादा होती रहती है। इससे भी व्यक्तिगत विभिन्नता पैदा हो जाती है।
7. **स्वास्थ्यः** कुछ लोग स्वस्थ, कुछ साधारण तथा कुछ लोग दुर्बल होते है इसलिए उनमें शारीरिक शक्ति, कार्यक्षमता में भिन्नता पायी जाती है। शारीरिक स्वास्थ्य का मानसिक स्वास्थ्य से भी संबंध होता है।
8. **लिंग सम्बन्धी भिन्नताः** अक्सर यह देखा गया है कि बालिकाओं का विकास बालकों की अपेक्षा जल्दी होता है। बालकों में कठोरता, वीरता, साहस एवं क्रोध आदि गुण होते है। जबकि बालिकाओं में दया, सौम्यता, कोमलता एवं लज्जाशीलता आदि गुण होते है। इस प्रकार लिंगीय भेद से भी उनके व्यक्तित्व में भिन्नता हो जाती है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि उपर्युक्त सभी कारण ही वैयक्तिक भिन्नता के प्रमुख कारक हैं एवं से ही सामान्यतः सभी व्यक्तियों की विभिन्नताओं से संबधित है। इनमें सर्वाधिक प्रभाव वंशानुक्रम एवं वातावरण का होता है।

वैयक्तिक भिन्नता की अध्ययन विधियां; Methods to study

Individual difference) व्यक्ति की वैयक्तिक भिन्नता को जानने हेतु विधियां निम्न है

बुद्धि परिक्षण Intelleqence Test) – बुद्धि परिक्षण की विधियां प्रथमतः बिने एवं साइमन द्वारा प्रतिपादित की गई थी। बाद में बुद्धि परिक्षण का तरीका टरमैन ने प्रतिपादित किया। यदि किसी बालक की मानसिक आयु 15 वर्ष एवं वास्तविक आयु 20 वर्ष है तो बुद्धि लब्धि निम्न होगी।

बुद्धि लब्धि = मानसिक आयु / वास्तविक आयु × **100**

इसमें 100 अंक पाने वाला साधारण उससे ज्यादा पाने वाला प्रतिभाशाली एवं कम पाने वाला मंद बुद्धि माना जाता है।

संवेग परीक्षण Emotional Tests) इस विधि में कुछ यंत्र प्रतिपादित किये जाते है। जिससे संवेगात्मकता माप ली जाती है। जैसे एक चोर की छाती पर एक विशेष यंत्र रख दिया जाय तो उसकी धड़कन जानकर उसके विषय में निर्णय ले लिया जाता है।

विशेष प्रवीणता परीक्षण ैचमबपंस Aptitude Tests)% विभिन्न प्रकार की प्रवीणता जानने के लिए विभिन्न विषयों को लिया जाता है। जैसे – कला, विज्ञान, अर्थशास्त्र आदि। इनसे बालक के भविष्य निर्माण में सहायता मिलती है।

निष्पत्ति परीक्षण Achievement Tests)% इसमें विभिन्न विषयों जैसे विज्ञान, गणित, इतिहास, या भूगोल आदि में योगदान जानने हेतु सब विषयों में से विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछे जाते है एवं उनकी निष्पत्ति का पता लगाते हैं।

जीवन इतिहास एवं व्यक्तिगत् परीक्षण History and Personality Tests) जीवन इतिहास परीक्षण में जीवन की पूरी घटनाओं का स्मरण करना पड़ता है। इसमें विभिन्न अंगों से सम्बन्धित प्रश्न बनाये जाते हैं और बालकों से हा या नहीं में लेकर सम्बन्धित जानकारी प्राप्त की जाती है। व्यक्तित्व परीक्षण में प्रश्नावली, प्रक्षेपण एवं मूल्याकंन आदि परीक्षण प्रमुख है।

सामूहिक आलेख पत्र इसमें विधार्थी के सम्बन्ध में सूचनायें लिखी जाती हैं जैसेः उपस्थित सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि, स्वास्थ्य, रूचियां, सामान्य योग्यतायें, विशिष्ट कौशल, व्यक्तित्व के गुण, विद्यालय के प्रति दृष्टिकोण, विद्यालय का कार्य, प्रधानाचार्य का मत इत्यादि। इस आलेख पत्र को देखकर बच्चों में भिन्नता जानी जा सकती है। वास्तव में यही सब उपर्युक्त विधियां है। जिनकी मदद से वैयक्तिक विभन्नता की जानकारी प्राप्त की जा सकती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शेरजंग, निर्मला, मनोविज्ञान का पारिभाषिक शब्द कोश, राधाकृष्ण प्रकाशन
2. प्रा.लिः नई दिल्ली, प्र.सं.–2012, पृ.–128.
3. शुक्ला, आराधना, व्यक्तित्व : संप्रत्यय, निर्धारक एवं सिद्धांत, राधा पब्लिकेशंसः नई दिल्ली, 1997, पृ.–1.
4. शर्मा, राजेन्द्र, बाल–विकास एवं बाल मनोविज्ञान, सबलाइम पब्लिकेशंस : जयपुर, प्र.सं.–1998, पृ.–111.
5. मिश्रा, डॉ. महेन्द्र कुमार, मनोविज्ञान विश्वकोश, अर्जुन पब्लिकेशन हाउसः नई दिल्ली, प्र.सं., 2008, पृ.–119.
6. वर्मा, डॉ. प्रीति, डॉ. डी.एन. श्रीवास्तव, बाल मनोविज्ञान : बाल विकास, विनोद
7. पुस्तक मंदिर : आगरा, नवम् सं.–1993, पृ.–442.
8. पाण्डे, जगन्नाथ, बाल मनोविज्ञान, तारा पब्लिकेशंस : वाराणसी, 1966, पृ.–36.
9. सिंह, अरूण कुमार, आशीष कुमार सिंह, आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास : दिल्ली, चतुर्थसं.–2006, पृ.–465.